B.Ed II year
विषय - समावेशी शिक्षा
इकाई - 2

Date
20/04/2020
Monday

प्रकरण - समावेशी शिक्षा में अध्यापक की भूमिका

## समावेशी शिक्षा में अध्यापक
## [Teacher in Inclusive Education]

समावेशी परिवेश में शिक्षण एक जटिल कार्य है। इसलिए प्रत्येक अध्यापक को अतिरिक्त समय, प्रशिक्षण, संसाधन, समुदाय व अभिभावक का सहयोग मिलना चाहिए।

समावेशी शिक्षा में अध्यापक की भूमिका बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण होती है। अध्यापक को

3R
- Right → अधिकार +
- Roles → भूमिका +
- Responsibilities → उत्तरदायित्व

की जानकारी का होना अति आवश्यक है।

## समावेशी शिक्षा प्रणाली में एक अध्यापक की भूमिका

1- मानवीय विभिन्नताओं को समझना।
2- निरन्तर मूल्यांकन।
3- वैकल्पिक शिक्षण तकनीकी का निर्माण।
4- अनुदेशनात्मक प्रक्रिया।
5- शिक्षाविदों का सहयोग।
6- आत्मविश्वास जागृत करना।
7- प्रभावशाली अधिगम।
8- सकारात्मक सोच का विकास।

Scanned with CamScanner

# समावेशी प्रणाली में अध्यापक का उत्तरदायित्व

समावेशी प्रणाली में एक अध्यापक के उत्तरदायित्व को प्रत्येक प्रकार के विशिष्ट बालकों के प्रति अलग - अलग निम्न रूप से लिया जा सकता है -

## दृष्टि बाधित बालकों के प्रति अध्यापक का उत्तरदायित्व

(1) अभ्यास द्वारा अधिगम में सहायता।
(2) कक्षा में सुलभ संचालन।
(3) अल्प दृष्टि बालकों हेतु बड़े अक्षरों वाली किताब।
(4) श्रवण प्रशिक्षण देना।
(5) ऊँची आवाज में बोलते हुए पढ़ना।
(6) ब्रेल लिपि का प्रयोग।
(7) चिकित्सीय सेवा उपलब्ध कराना।

## श्रवण बाधित बालकों के प्रति अध्यापक का उत्तरदायित्व

1- बालकों की समस्या का समाधान।
2- शब्द कोष की जानकारी।
3- धीमी गति से बोलना।
4- श्रवण उपकरणों की पूरी जानकारी।

## शारीरिक रूप से बाधित बालकों के प्रति अध्यापक

(1) सकारात्मक आत्म संप्रत्यय का विकास।
(2) स्वावलम्बी बनाना।
(3) इच्छा शक्ति में वृद्धि करना।
(4) सहपाठियों से मधुर सम्बन्ध स्थापित करना।

7- प्रभावशाली अधिगम।
9- सकारात्मक सोच का विकास।

Scanned with CamScanner

मानसिक स्वास्थ्य

## अधिगम असमर्थी बालकों के प्रति उत्तरदायित्व

(1) चित्रों की सहायता से पढ़ना।
(2) समस्यात्मक क्षेत्रों मे बार-2 अभ्यास।
(3) आवश्यकतानुसार शिक्षण सामग्री।
(4) व्यवहारिक विशेषताओं का ठीक ढंग से निरीक्षण।

## प्रमस्तिष्कीय स्तम्भन के लिए बालकों के प्रति अध्यापक के उत्तरदायित्व

इस प्रकार के बच्चों को पढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम की आवश्यकता नही होती, परन्तु पढ़ाने की विधि अलग होनी चाहिए।

(1) भावनात्मक सहयोग (कक्षा मे)
(2) सूचना एवं संचार तकनीकी का प्रयोग।
(3) अतिरिक्त समय का सदुपयोग
(4) शारीरिक अभ्यासों एवं खेलो मे सहभागिता निश्चित करना।

B.R.C. Deoband
Sapna Tyagi
Mid Pro —